

## पश्चिम विदर्भ – वर्षा की संभावना, भूमिउपयोजन और सिंचाई क्षेत्र

प्रा. एन. व्ही. नरूले

भूगोल विभाग प्रमुख, इंदिरा महा.कळंब, जि. यवतमाळ.

( 21 )

भारत कृषि प्रधान देश है। भारत में 70 से 80 प्रतिशत लोग कृषि उद्योग में है। यहाँ की कृषिपर प्राकृतिक घटकों का प्रभाव पडता है। इसमें वर्षा महत्वपूर्ण है, क्योंकि कृषि उद्योग ज्यादातर वर्षा पर ही निर्भर होता है। वर्षा की कमी से कृषि उद्योग पर गहरा असर होता है। प्रस्तुत शोधनिबंध में पश्चिम विदर्भ में वर्षा की संभाव्यता और उस प्रदेश में भूमिउपयोजन और साथ साथ यहाँ की सिंचाई क्षेत्र पर संभाव्य प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीय स्त्रोतों द्वारा प्राप्त जानकारी के आधार पर ही इस विषय का विश्लेषण किया है। इस अध्ययन में वर्षा की संभाव्यता और उस प्रदेश में भूमि उपयोगन की मात्रा और सिंचाई क्षेत्र की मात्रा कैसी है, इसका प्राकृतिक स्वरूप से अध्ययन किया गया है।

विशेष संज्ञा – संभावना, उपयोजन, सहसंबंध, निर्देशांक, सिंचाई क्षेत्र

प्रस्तावना :-

भारत का कृषि उद्योग मुख्यतः वर्षा पर ही निर्भर होता है। सामान्यतः जहाँ पर वर्षा की मात्रा ज्यादा होती है वहाँ पर भूमिउपयोजन और सिंचाई क्षेत्र साथ-साथ सिंचाई स्त्रोत भी ज्यादा होते है। इस अध्ययन में पश्चिम विदर्भ में वर्षा की संभावना का भूमिउपयोजन और सिंचाई क्षेत्र पर क्या असर दिखाई देता है, इसका विवेचन किया गया है।

किंतु पश्चिम विदर्भ के कई प्रदेशों में वर्षा की संभावना ज्यादा होकर भी वहाँ पर भूमिउपयोजन, सिंचाई क्षेत्र और स्त्रोत की मात्रा कम दिखाई देती है। क्योंकि इन प्रदेशों में ज्यादा वर्षा की मात्रा पहाडीयों मे उत्तर प्रदेशों में या तो जंगलव्याप्त क्षेत्रों में ही होती है। लेकिन इसमें संपूर्ण भूमिउपयोजन की मात्रा और सिंचाई क्षेत्र कम दिखता है। क्योंकि जिस प्रदेश में वर्षा की संभावना ज्यादा है वह प्रदेश पहाडीयों का प्रदेश होने के कारण वहाँ पर भूमिउपयोजन और सिंचाई क्षेत्र की कमी पाई जाती है।

महाराष्ट्र प्रदेश में का भूमिउपयोजन का अध्ययन किया तो ऐसा लगता है की, महाराष्ट्र में भूमिउपयोजन के कुल क्षेत्र में 11.5 प्रतिशत सिंचाई क्षेत्र है, यहाँ कुओंद्वारा सबसे अधिक मात्रा में सिंचाई होती है। इसी प्रकार का चित्र पश्चिम विदर्भ में दिखाई देता है। यहाँ संपूर्ण भूमिउपयोजन में सिंचाई क्षेत्र 19.55 प्रतिशत (1990-91) देखा जाता है। इनमें कुओं पर विद्युत मशीनों के द्वारा होने वाले सिंचाई का प्रमाण सबसे अधिक पाया जाता है।

**उद्दिष्ट :-**

1. पश्चिम विदर्भ में वर्षा की संभाव्यता का अध्ययन करना ।
2. भूमिउपयोजन के साथ सिंचाई क्षेत्र की मात्रा का अध्ययन करना ।
3. पश्चिम विदर्भ में सिंचाई क्षेत्र के साथ-साथ विविध स्रोतों द्वारा सिंचाई की मात्रा का अध्ययन करना ।

**जनकारी स्रोत :-**

पश्चिम विदर्भ में वर्षा की संभावना, भूमिउपयोजन और सिंचाई क्षेत्र और स्रोतों का अध्ययन करने के लिए जानकारी प्राप्त हुई है, वह जिला सामाजिक और आर्थिक समालोचन अमरावती, अकोला, यवतमाल और बुलढाणा जिले से ली गई है, तथा जनगणना अहवाल पुस्तिका से प्राप्त हुई है । सिंचाई क्षेत्र संबंधी जानकारी और सिंचाई विभाग से प्राप्त की गई है ।

**अध्ययन पध्दती :-**

प्रस्तुत पश्चिम विदर्भ में वर्षा की मात्रा और भूमिउपयोजन का अध्ययन करने के लिये नीचे दी गई पध्दतियों का उपयोग किया है ।

पश्चिम विदर्भ में वर्षा की संभाव्यता निकालने के लिये कुछ सूत्रों का इस्तेमाल किया है । और भूमिउपयोजन और सिंचाई क्षेत्र के लिये भी सूत्रों का इस्तेमाल किया है ।

संपूर्ण भूमिउपयोजन क्षेत्र और सिंचाई क्षेत्र की मात्रा का सहसंबंध और स्थान निर्देशांक निकालने के लिये सांख्यिकीय पध्दतियों का उपयोग किया गया है ।

$$\text{क्ष - प्रदेशों में वर्षा का प्रतिशत} = \frac{\text{क्ष - प्रदेशों की वर्षा की संभावना}}{\text{प. विदर्भ की कुल वर्षा}} \times 100$$

$$\text{क्ष - प्रदेशों में भूमिउपयोजन प्रतिशत} = \frac{\text{क्ष - प्रदेशों में कुल भूमिउपयोजित क्षेत्र}}{\text{प. विदर्भ का कुल भौगोलिक क्षेत्र}} \times 100$$

$$R = 1 - \frac{6sd^2}{N^3 - N}$$

**अध्ययन प्रदेश :-**

प्रस्तुत अध्ययन में पश्चिम विदर्भ प्रदेश का अध्ययन किया गया है । यह प्रदेश महाराष्ट्र राज्य में स्थित विदर्भ राज्य का पश्चिमी प्रदेश है । इसमें 4 जिलों का अंतर्भाव होता है ।

उसमें अमरावती, अकोला, यवतमाल और बुलढाणा ये जिले हैं। अभी वाशिम नया जिला बना है। लेकिन इसके बारे में संपूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं हो पायी है।

इस प्रदेश का संपूर्ण क्षेत्रफल 45,465 वर्ग कि.मी. है और उसमें 56 तहसिलों का अंतर्भाव है। इस प्रदेश के संपूर्ण क्षेत्रफल में से जंगलव्याप्त क्षेत्र 15.44 प्रतिशत, कृषि योग्य क्षेत्र 72.12 प्रतिशत, अकृषि क्षेत्र 5.08 प्रतिशत, बंजर जमीन 6.71 प्रतिशत है।

इस प्रदेश का विस्तार  $76^{\circ}$  पूर्व से  $79^{\circ} 15'$  देशांतर तथा  $19^{\circ} 15'$  उत्तर से  $21^{\circ}$  होता है। यहाँ पर जादा से ज्यादा तापमान  $24^{\circ}$  से  $26^{\circ}$  से.ग्रे. उपर और कम से कम  $8^{\circ}$  से  $27^{\circ}$  से.ग्रे. तक रहता है। यहाँ पर ग्रीष्मकाल में तापमान  $45^{\circ}$  से  $46^{\circ}$  से.ग्रे. तक बढ़ता है और 'लू' की लहर दौड़ती है। जनवरी माह में यहाँ पर तापमान कम होता है।  $10^{\circ}$  से.ग्रे. से  $15^{\circ}$  से.ग्रे. तक।

पश्चिम विदर्भ प्रदेश में दख्खन पठार का ही हिस्सा है। इसलिए यहाँ पर ज्वालामुखीय चट्टानें पायी जाती हैं। इस प्रदेश के उत्तर में गाविलगड की पहाडियाँ हैं। चिखलदरा तहसिल इन पहाडियों के नजदीक होने के कारण इसको 'थंडा प्रदेश' माना जाता है। और ये प्रदेश वनों से व्याप्त है। इस प्रदेश में पश्चिम की ओर बहने वाली पूर्णा नदी है जो आगे जाकर तापी नदी को मिलती है इस प्रदेश के पूर्व में वर्धा नदी बहती है जो वैनगंगा को मिलती है।

पश्चिम विदर्भ का अमरावती जिला महत्वपूर्ण माना जाता है। इसका मध्यवर्तीय प्रदेश विदर्भ का ही नहीं तो राज्य और राष्ट्र का जलविभाजक माना जाता है, क्योंकि अमरावती जिले के मध्य भाग में छोटी पहाडियाँ हैं। वही जलविभाजक का कार्य करती है। इस कारण यहाँ पूर्व दिशा की नदियों का पानी बंगाल की खाडी में जाता है और पश्चिम और बहने वाले नदियों का पानी अरब सागर में मिलता है। इस प्रदेश में जलप्रवाह प्रणालियों का स्वरूप वृक्षाकार है किंतु उत्तर में पहाडियों के दरम्यान जलप्रवाह प्रणाली जालीदार दिखाई देती है। इस प्रदेश में 'पूर्णा' नदी महत्वपूर्ण है और ये पश्चिम दिशा में तापी नदी से मिलती है। वैसे ही सिपना, शहानूर, चंद्रभागा ज्ञानगंगा, खडकपूर्णा, वानगंगा ये सब तापी की उपनदियाँ इस क्षेत्र में बहती हैं। और वर्धा, माहू, बंबला, वैनगंगा ये उपनदियाँ प्राणहिता नदी को मिलाती हैं। पश्चिम विदर्भ के उत्तर में और अमरावती जिले के मध्य, यवतमाल के उत्तर-पूर्व बुलढाणा के उत्तर भागों में वन दिखाई देते हैं। ये वन मानसून प्रकार के पतझड़ वन हैं। जहाँ वर्षा की मात्रा अधिक होती है और वहाँ पर साग और बांस के वृक्ष ज्यादा पाये जाते हैं।

पश्चिम विदर्भ में वर्षा की संभावना और भूमी उपयोजना और सिंचाई क्षेत्र का अध्ययन किया गया है। और वर्षा की संभाव्यता का भूमिउपयोजन में सिंचाई पर क्या प्रभाव होता है इसका अध्ययन भी किया गया है।

**पश्चिम विदर्भ में वर्षा की संभावना :-**

पश्चिम विदर्भ में वर्षा की संभावना का अध्ययन करते समय ऐसा दिखता है कि यहाँ पर कई जगह वर्षा की मात्रा और संभावना ज्यादा है और कई क्षेत्र पर कम दिखाई देती है। पश्चिम विदर्भ में वर्षा की 1000 मि.मि. वर्षा की संभावना ये प्रतिशत में दिखाई गयी है। पश्चिम विदर्भ में 1000 मि.मि. वर्षा की संभावना 40-60 प्रतिशत है। संपूर्ण पश्चिम विदर्भ अध्ययन किया तो ऐसा दिखता है कि यहाँ पर वर्षा का स्वरूप विषम और यह भूमिउपयोजन को प्रभावित करता है।

(पश्चिम विदर्भ के जिलों में वर्षा की संभावना (1000 मि.मि. में) नीचे दि गई है।)

1. पश्चिम विदर्भ के अमरावती जिले में उत्तर में जो मेलघाट पहाड़ियाँ हैं वहाँ पर 1000 मि.मि. वर्षा की संभावना प्रतिशत 100 है क्योंकि यहाँ पर दस साल का कालखंड देखा जाये तो 1000 मि.मि. वर्षा की संभावना प्रतिशत पूर्ण है। अमरावती जिले के पूर्व व दक्षिण में संभावना 20-80 पायी जाती है। क्योंकि इस प्रदेश में 1000 मि.मि. वर्षा का दस साल का काल देखा तो इसमें 2-4 साल ही वर्षा की संभावना दिखाई देती है।
2. अकोला जिले के संपूर्ण भाग में 1000 मि.मि. वर्षा की संभावना 20-40 दिखाई पडती है। दस सालों के यहाँ पर दो से चार साल 1000 मि.मि. वर्षा की संभावना दिखाई देती है।
3. यवतमाल जिले के पश्चिम में 1000 मि.मि. वार्षिक वर्षा की संभावना 20-40 प्रतिशत मध्य भाग में 40-60 प्रतिशत पूर्व भाग में और 60-80 प्रतिशत पश्चिम भाग में वर्षा की संभावना दिखाई देती है। इस जिले में वार्षिक वर्षा दो से चार वर्ष मध्य भाग में चार से छह साल में पूर्व भाग में 6-8 साल वर्षा की संभावना जिले के अन्य भागों में दिखाई देती है।
4. बुलाढाणा जिले के संपूर्ण भाग में 1000 मि.मि. वार्षिक वर्षा की संभावना केवल प्रतिशत 10 से 20 है। इस सालों का कालखंड देखा जाये, तो यहाँ पर एक से दो साल 1000 मि.मि. वर्षा की संभावना दिखाई देती है।

इस प्रकार पश्चिम विदर्भ में वर्षा की संभावना से संपूर्ण जिले का चित्र स्पष्ट होता है। वर्षा की मात्रा पर ही भूमिउपयोजन और सिंचाई निर्भर होती है। पश्चिम विदर्भ में तहसिल निहाय वर्षा की संभावना (वर्षा की संभावना 1000 मि.मि.)

प्रस्तुत मानचित्र क्र.1 में पश्चिम विदर्भ के तहसिल में 1000 मि.मि. वर्षा की संभावना दर्शायी गई है। इस मानचित्र के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि, पश्चिम विदर्भ में वर्षा का प्रमाण अन्यत्र एक जैसा न होकर उसमें विविधता पाई जाती है। तहसिलनिहाय वर्षा का प्रमाण देखा जाय तो ऐसा दिखता है कि, कुछ प्रदेश में वर्षा की मात्रा कम है। तो कहीं-कहीं मध्यम और कहीं पर ज्यादा वर्षा की संभावना दिखती है। और इसका प्रभाव भूमिउपयोजन, सिंचाई पर देखा गया है।

इस मानचित्र के अनुसार पश्चिम विदर्भ के उत्तर में पर्जन्य की संभावना 100 मि.मि. दिखाई देती है इसमें धारणी, चिखलदरा, अचलपूर तहसिलका समावेश है। ये प्रदेश पहाडी और वनों से घिरा है। पश्चिम विदर्भ के यवतमाल, कलम, रालेगांव, मारेगांव, झरी-जामणी, केलापूर, घाटंजी और नेर इस तहसिल प्रतिशत 60 से 80 वर्षा की संभावना है।

पश्चिम विदर्भ के दक्षिण और पूर्व भागों में प्रतिशत 40 से 60 वर्षा की संभावना है। इसमें से यवतमाल जिले के महागांव, आर्वी, उमरखेड, घाटंजी, दारव्हा, बाभुलगांव और दिग्रस इन तहसिलका समावेश है। अमरावती जिले के तिवसा तहसिल का संपूर्ण प्रदेश और धामणगांव रेल्वे, वरूड इस तहसिलका आधे से ज्यादा प्रदेश का समावेश होता है।

पश्चिम विदर्भ के अकोला जिले के बार्शीटाकली, मूर्तीजापूर, आकोट, कारंजा, मंगरूलपील, मालेगांव, रिसोड, और तेलहारा इन तहसिलों के आधे से ज्यादा प्रदेशों में प्रतिशत 20 से 40 वर्षा की संभाव्यता है। इस प्रकार की वर्षा की संभावना अमरावती के दर्यापूर, भातकुली, नांदगाव खंडेश्वर, चांदुरबाजार, अचलपूर, अंजनगाव सूर्जी, धामणगांव रेल्वे, वरूड, चांदुर रेल्वे, मोर्शी इस तहसिल के कई हिस्सों में दिखाई देती है।

पश्चिम विदर्भ में तहसिल निहाय वर्षा की संभावना सबसे कम पश्चिम प्रदेश में दिखाई देती है। इसमें बुलढाणा जिले का अधिक से अधिक से अधिक प्रदेश समाविष्ट होता है। इसमें मलकापूर, नांदुरा, शेगांव, मोताला, खामगांव, बुलढाणा, चिखली, देऊळगांव राजा यहाँ कम से कम याने प्रतिशत 10-20 वर्षा की संभाव्यता देखी जाती है। जलगांव जामोद, संग्रामपूर, पातूर, मेहकर, सिंदखेडराजा वैसे ही अकोला जिले के कछ तहसिलों के कई हिस्सों में 10 से 20 वर्षा की संभावना दिखती है।

### पश्चिम विदर्भ का भूमिउपयोजन क्षेत्र :-

पश्चिम विदर्भ के चार जिलों का भूमिउपयोजन क्षेत्र और कुल भौगोलिक क्षेत्र की तुलना में सबसे ज्यादा भूमि उपयोजन क्षेत्र अकोला जिले में प्रतिशत 59.86 पाया गया है। सबसे कम भूमिउपयोजन क्षेत्र यवतमाल जिले का प्रतिशत 71.61 है और अमरावती जिले में 79.42 और बुलढाणा जिले में पाया गया है।

#### 1. 50 प्रतिशत से कम भूमिउपयोजन क्षेत्र :-

पश्चिम विदर्भ के तहसिल निहाय प्रतिशत 50 भूमि उपयोजन क्षेत्र में चिखलदरा तहसिल का समावेश होता है। क्योंकि इस तहसिल का ज्यादा प्रदेश पहाडियों और वनों से व्याप्त है। इसलिए यहाँ पर कम भूमिउपयोजन क्षेत्र दिखाई देता है।

#### 2. 50-70 प्रतिशत भूमिउपयोजन क्षेत्र :-

इसमें धारणी, अकोट, पुसद, महागांव, उमरखेड, यवतमाल, कलम, घाटंजी, केलापूर, झरी-जामणी और वणी तहसिलका अंतर्भाव होता है।

### 3. 70-90 प्रतिशत भूमिउपयोजन क्षेत्र :-

इसमें अचलपूर, मोशी, वरुड, अमरावती, तिवसा, चांदूर रेल्वे, जळगांव जामोद, संग्रामपूर, मोताला, शेगांव, खामगांव, बुलढाणा, चिखली, मेहकर, देऊलगांवराजा, शिंदखेडराजा और लोणार, मुर्तिजापूर, बार्शीटाकळी, कारंजा, मानोरा, मंगरूलपीर, मालेगांव, वाशिम, दिग्रस, दारव्हा, आर्णी, नेर, बाभुलगांव, रालेगांव, मारेगांव आदि तहसिलों का अंतर्भाव होता है।

### 4. प्रतिशत 90 से ज्यादा भूमिउपयोजन क्षेत्र :-

इसमें चांदूरबाजार, भातकुली, अंजनगांवसुर्जी, दर्यापूर, धामणगांव रेल्वे, नांदगांव खंडेश्वर, मलकापूर, नांदूरा, तेलहारा, बालापूर और अकोला तहसिल का अंतर्भाव होता है। इस अध्ययन से ऐसा दिखाई पड़ता है कि 70-90 प्रतिशत भूमिउपयोजन क्षेत्रों वाले तहसिल की संख्या ज्यादा है और 50 प्रतिशत से कम भूमिउपयोजन क्षेत्र की संख्या सबसे कम है। (मानचित्र क्र.2)

प्रस्तुत शोध निबंध में पश्चिम विदर्भ में वर्षा की संभावना, भूमि उपयोजन और सिंचाई क्षेत्र का अध्ययन किया गया है। इस निबंध में पश्चिम विदर्भ में वर्षा की संभावना भूमिउपयोजन सिंचाई क्षेत्र और सिंचाई के स्रोत इसका क्या प्रभाव है, इनका आपस में सहसंबंध कैसा है इसका अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

### पश्चिम विदर्भ में भूमिउपयोजन और सिंचाई क्षेत्र का सहसंबंध :-

पश्चिम विदर्भ में चार जिले कुल भौगोलिक क्षेत्र 89.753 वर्ग कि.मी. है। इस कुल क्षेत्र में 30,96,093 हेक्टर जमीन कृषि उद्योग में लायी जाती है। इस कुल क्षेत्र में 95,678 हेक्टर 3.8 प्रतिशत जमीन सिंचाई के नीचे है। इसमें अमरावती जिले का सिंचाई क्षेत्र कृषि जमीन की तुलना में प्रतिशत 3.80 है। अकोला 3.17, बुलढाणा, 3.30 और यवतमाल जिले में 2.24 कुल कृषि जमीन की तुलना में जिलावार दिखता है।

पश्चिम विदर्भ की कुल कृषि जमीन की तुलना में सिंचाई क्षेत्र अमरावती प्रतिशत 27.91, अकोला 26.22, यवतमाल 20.80 और बुलढाणा जिले में 25.05 है। पश्चिम विदर्भ की कुल कृषि क्षेत्र में अमरावती जिले का सिंचाई क्षेत्र सबसे ज्यादा 27.91 प्रतिशत है और सबसे कम यवतमाल जिलों में 20.80 है। पश्चिम विदर्भ में सिंचाई क्षेत्र का स्थान निर्देशांक देखा तो अमरावती जिले में सिंचाई क्षेत्र का स्थान निर्देशांक 3.87, अकोला 3.07, यवतमाल 2.24 और बुलढाणा 3.29 है। याने कि पश्चिम विदर्भ के कुल सिंचाई क्षेत्र में अमरावती का सिंचाई क्षेत्र सबसे अधिक है और उसका स्थान निर्देशांक भी 3.87 अधिक है। यवतमाल जिले का प्रतिशत प्रमाण पश्चिम विदर्भ के कुल सिंचाई क्षेत्र की तुलना में कम है उसी प्रकार उसका स्थान निर्देशांक भी अन्य जिलो की तुलना में कम 2.24 है। (सारणी क्र.1)

## सारणी क्र.1 पश्चिम विदर्भ में कृषि क्षेत्र और सिंचाई क्षेत्र (1990-91)

अ. क्र.	जिला	कृषि क्षेत्र (हेक्टर)	प्रतिशत सिंचाई क्षेत्र	स्थान निर्देशांक
1	अमरावती	6,88,345	27.91	3.87
2	अकोला	7,91,386	26.22	3.07
3	यवतमाल	8,89,876	20.80	2.24
4	बुलढाणा	7,26,487	25.05	3.29

स्त्रोत - जनगणना अहवाल और जिला आर्थिक, सामाजिक समालोचन (1990-91)

पश्चिम विदर्भ में कृषि क्षेत्र और सिंचाई क्षेत्र महाराष्ट्र राज्य के तुलना से दृष्टि से कम है। पश्चिम विदर्भ में कृषि क्षेत्र और सिंचाई क्षेत्र का सहसंबंध देखा तो वो है। ये सहसंबंध निम्नस्तरीय ऋणात्मक दिखता है। इससे ये स्पष्ट होता है पश्चिम विदर्भ में भौगोलिक क्षेत्र की तुलना में कृषि जमिन कम है और साथ-साथ सिंचाई क्षेत्र भी कम है।

पश्चिम विदर्भ में सिंचाई क्षेत्र और सिंचाई के स्त्रोत :-

पश्चिम विदर्भ में सिंचाई क्षेत्र के साथ सिंचाई स्त्रोत को देखा जाए तो ऐसा दिखाई देता है की, इस प्रदेश में विविध सिंचाई स्त्रोतोंद्वारा सिंचाई की जाती है। (मानचित्र क्र.3) उदा- कुओं (कुआँ, विद्युतपंप द्वारा) तालाब, नदियाँ नहर, नलकूप इत्यादी स्त्रोतोंद्वारा सिंचाई की जाती है। इन स्त्रोतों को तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो सबसे ज्यादा सिंचाई कुओं पर विद्युत पंप लगाकर की जाती है। इसका कुल प्रतिशत प्रमाण 69.79 है। सबसे कम सिंचाई स्त्रोत नलकूप का दिखाई देता है 1.51 इतत्र स्त्रोतों की मात्रा 5.06 सरकारी और प्रायव्हेट नहर 14.20 और 2.23 है। और इन सभी स्त्रोतों से सिंचाई की जाती है।

पश्चिम विदर्भ में जिलानिहाय सिंचाई स्त्रोतों में सभी जिलों में कुआँ विद्युतपंप द्वारा सिंचन अधिक मात्रा में होती है। लेकिन अमरावती जिले में 98.53 प्रतिशत कृषि जमिन पर कुओं द्वारा सिंचाई की जाती है और नदी द्वारा सिंचाई कम मात्रा में होती है। इसका कारण यह है कि यहाँ पर बहनेवाली नदियाँ जादातर ग्रीष्मकाल में सुख जाती हैं वैसे ही नहर द्वारा सिंचाई नहीं होती है। यवतमाल जिले में कुओं पर विद्युत पंप बिठाकर सिंचाई मात्रा अधिक है 55.77 और उसके पश्चात सरकारी नहर द्वारा सिंचाई भी सबसे अधिक है (8.73) अन्य स्त्रोतों द्वारा सिंचाई का प्रमाण कम है। 1.48 प्रायव्हेट नहर और नलीकूप स्त्रोत उपलब्ध नहीं हैं। अकोला और बुलढाणा जिले में भी कुओं पर विद्युत पंप द्वारा सिंचाई की मात्रा जादा है। बुलढाणा की तुलना में अकोला जिले में सरकारी नहर द्वारा सिंचाई का प्रमाण अधिक दिखता

है। वैसे ही इन दोनों जिलों में प्रायक्वेट नहर और नलीकूप पर विद्युतपंप बिठाकर की सिंचाई की जाती है लेकिन उसका प्रमाण बहुत ज्यादा नहीं है। (सारणी क्र.2)

**पश्चिम विदर्भ की बड़ी और मध्यम सिंचाई योजनाएँ :-**

पश्चिम विदर्भ में कुछ बड़ी और कुछ मध्यम सिंचाई योजनाएँ अभी-अभी विकसित हुई हैं। उसमें अमरावती जिले के अप्पर वर्धा योजना, शहानूर योजना, अकोला में महान योजना, यवतमाल में अरुणावती योजनाएँ विशेष महत्वपूर्ण हैं।

पश्चिम विदर्भ में बड़ी और मध्यम योजनाद्वारा सिंचाई की जाती है। इसमें कुल लाभ क्षेत्र (हेक्टर में) 2,54,419 है। इसमें सबसे ज्यादा यवतमाल जिले का 55.57 प्रतिशत है और सबसे कम लाभ क्षेत्र अमरावती जिले का 13.76 प्रतिशत है। अकोला जिले का 22.91 प्रतिशत और बुलढाणा जिले का 20.06 प्रतिशत है। इसलिए योजनाओं के अंतर्गत सबसे ज्यादा क्षेत्र यवतमाल जिले का 66.40 प्रतिशत है और सबसे कम क्षेत्र 8.19 प्रतिशत अमरावती जिले का है। अकोला जिले में 17.75 प्रतिशत और बुलढाणा जिले में 11.77 प्रतिशत है।

पश्चिम विदर्भ का कुल चित्र देखा जाए तो यहाँ पर सबसे जादा वर्षा की संभावना अमरावती के उत्तर में है और सबसे कम बुलढाणा जिले के पश्चिम में दिखाई पडता है। और अन्यत्र प्रदेश में मध्यम स्वरूप की संभावना दिखती है। भूमिउपयोजन में सबसे ज्यादा कृषि क्षेत्र अमरावती जिले का है लेकिन विविध स्रोतोंद्वारा सिंचाई में सबसे कम क्षेत्र अमरावती जिले का है और सबसे ज्यादा लाभ क्षेत्र यवतमाल जिले का है।

**निष्कर्ष :-**

प्रस्तुत शोध निबंध में पश्चिम विदर्भ में वर्षा की संभावना का भूमिउपयोजन सिंचन के साथ संबंधों का अध्ययन किया गया है। उसमें नीचे दिये गये निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

1. पश्चिम विदर्भ में अमरावती जिला महत्वपूर्ण है और उसके उत्तर में वर्षा की संभावना अन्य जिलों की तुलना से सबसे ज्यादा है। लेकिन यहाँ पर कृषि क्षेत्र कम है क्योंकि वो प्रदेश पहाडियों से घिरा हुआ है।
2. बुलढाणा जिले के पश्चिम भागों में वर्षा की संभावना सबसे कम है। यहाँ पर कृषि क्षेत्र मध्यम और सिंचाई क्षेत्र का भी कमी है साथ-साथ विविध स्रोतों द्वारा सिंचाई कम है।
3. यवतमाल जिले में सिंचाई क्षेत्र कम है।
4. यवतमाल में सरकारी नहर द्वारा सिंचाई का प्रमाण सबसे ज्यादा है। और यहाँ पर लाभ क्षेत्र की मात्रा भी ज्यादा है। क्योंकि वहाँ पर वर्षा की संभावना मध्यम स्वरूप की है।
5. अमरावती का भौगोलिक क्षेत्र ज्यादा होकर भी यहाँ पर सरकारी योजनाओं के तहत



## Current Global Reviewer

Impact Factor 2.143

UGC Approved Sr. No. 61524

ISSN 2320-4685

---

लाभ क्षेत्र की कमी दिखाई देती है क्योंकि यहाँ पर ज्यादातर जमीन बस्ती का अंतर्गत और बड़े क्षेत्रों के अंतर्गत है।

6. पश्चिम विदर्भ के सभी जिलों ने कुओं पर विद्युत पंप बिठाकर सिंचाई की मात्रा सर्वत्र जादा है।
7. अमरावती और यवतमाल जिलों में प्रायक्वेट नहर और नलकूपों सिंचाई के स्रोत नहीं हैं।
8. अकोला और बुलढाणा जिले में प्रायक्वेट नहर और नलकूपों सिंचाई के स्रोत नहीं हैं।